त

तर्ज-जिंदगी की न टूटे लड़ी

मेरे सतगुरू ये सेवा तेरी,
सबसे बढ़िया और सबसे ख़री
सेवा का न मोल कोई,अनमोल है सेवा तेरी

1- सेवा का ये अवसर मिला,धाम में तो ये सेवा नहीं
धंन धंन वो साथ हुए,सेवा दिल देके जिसने करी

2- इसमें है नफा ही नफा,नुकसान जरा भी नहीं
तन मन धन से सेवा करी,पहचान के धामधनी

3- सतगुरू मेरे धाम धनी,उनसे निसवत अखंड है मेरी
आए साथ हमारे हैं वो,माया की ही है देह धरी

4- सेवा सनमुख जन्म लो,लिया हुकम सिर चढ़ाए
अब न पीछे हटेंगे कभी,सेवा सुखदाई है ये घनी

Nijanand App